Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 4 | April 2019

SHAHARI V GRAMIN BHAVI ADHYAPKON V ADHYAPIKAON KE KAKSHA KAKSH VYAVHAR KA TULNATMAK ADHYAYAN

*Anita Kumari [1] | Dr. Arvind Ashiya [2]

[1] Ph.D. Scholar, Department of Education, Mohanlal Shukhadia University, Udaipur, India - 313001. (*Corresponding Author)
[2] Lecturer, Department of Education, Vidhya Bhawan G.S.T. College, Udaipur, India-313001.

ABSTRACT

शिक्षक का कक्षा में व्यवहार बहुत महत्व रखता है। शिक्षक का कक्षाकक्ष व्यवहार मुख्य रुप से बालक के व्यवहार को प्रभावित तथा परिवर्तित करने में सहायक होता है वर्तमान समय में अध्यापक की कक्षाकक्ष व्यवहार तथा छात्र अन्तःक्रिया से सम्बन्धित शोध कार्यो की अधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है क्योंकि अध्यापक के कक्षागत व्यवहार ही विद्यार्थियों की उपलब्धी तथा निश्पतियों को बढानें में मुख्य भूमिका निभाते है। अध्यापक व्यवहार के द्वारा भी शिक्षण की परिस्थितियों के प्रारुप को सुनिश्चित किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस बात पर केन्द्रित किया गया है कि भावी शिक्षकों के कक्षाकक्ष व्यवहार को वर्तमान पाठ्यक्रम की आवश्यकता 'विद्यार्थी केन्द्रित' शिक्षा के अनुरुप किस प्रकार निर्धारित किया जा सकता है।

KEYWORDS: कक्षाकक्ष व्यवहार, अप्रत्यक्ष व्यवहार, प्रत्यक्ष व्यवहार

भूमिका :

'शिक्षा की किसी भी योजना में मैं अध्यापक को केन्द्रीय स्थान देता हूँ।''

नेल्सन एल.बॉसिंग

शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित किया जाता है, उजागर किया जाता है तथा उसे नये ज्ञान, कुशलताओं, मूल्यों आदर्शो आदि को सिखाया जाता है। जिससे वह अपने वातावरण पर अधिकार पा सके समाज में अपना सही स्थान प्राप्त कर सके और मानव जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य कार्य जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करना हैं। राष्ट्र तथा समाज का विकास करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षक के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि –''किसी समाज में शिक्षक का दर्जा उसके सामाजिक सांस्कृतिक लोकाचार को प्रति बिम्बित करता है अतः कोई राष्ट्र अपने शिक्षको के स्तर के बिना उपर नही उठ सकता है।''

कक्षागत शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक का व्यवहार छात्रों के मन पर उसके व्यक्तित्व के रुप में प्रकट होता है। पूर्व अध्ययनों के माध्यम से जाना जाए तो विभिन्न कारक है जो छात्र शिक्षक की प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करते है जिसमें कक्षाकक्ष व्यवहार की अवधारणा मुख्य है।

शिक्षक के कक्षाकक्ष व्यवहार की अर्थ व परिभाषाएं :

अध्यापक का कक्षा कक्ष व्यवहार वास्तव में उसका शिक्षण से सम्बन्धी व्यवहार है। क्योंकि अध्यापक कक्षा में प्रमुख रुप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को संचालित करता है।

अध्यापक के कुछ कक्षाकक्ष व्यवहार विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डालते है जैसे – पढाना, भाशण देना, प्रोत्साहित करना, प्रशंसा करना, प्रश्न पूछना, विचारों को स्वीकार करना आदि। वहीं अध्यापक के कुछ कक्षाकक्ष व्यवहार विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव डालते है जैसे – निंदा करना, नियत्रिण करना, अधिकार दिखाना, आलोचना करना आदि।

परिभाषाएं

रेयन्स 1969 के अनुसार :– ''शिक्षक व्यवहार से तात्पर्य व्यक्ति की उन सभी क्रियाओं तथा व्यवहार से होता है, जो एक शिक्षक के करने योग्य मानी जाती है। विशेष रुप से वे क्रियाएं जो दूसरों के सीखने में निर्देशन एवं मार्ग दर्शन का कार्य करती है।''

म्यूएक्स तथा स्मिथ 1964 के अनुसार :– ''शिक्षक व्यवहार के अन्तर्गत शिक्षक की वे समस्त क्रियाएं आती है जो वह छात्रों के सीखने में उन्नति एवं वृद्धि हेतु विशेषतः कक्षा में करता है।

शिक्षक व्यवहार की मुख्य विशेशताएं –

1. शिक्षक व्यवहार के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों का कक्षाकक्ष में आमने सामने होना अनिवार्य होता है।
2. कक्षागत अन्तःक्रिया कक्षा में शिक्षक व्यवहार को प्रकट करने की एक महत्वपूर्ण विधि है।
3. शिक्षक व्यवहार शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनो रुप में प्रस्तुत

Copyright© 2019, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

किया जा सकता है। परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि शिक्षक किस प्रकार का व्यवहार करें।

4. शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन छात्रों की शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर निर्भर होता है।

5. शिक्षक के कुछ व्यवहार छात्रों के सिखने को सकारात्मक रुप से प्रभावित करते है और कुछ व्यवहार नकारात्मक रुप से।

शिक्षक के कक्षागत व्यवहार का वर्गीकरण

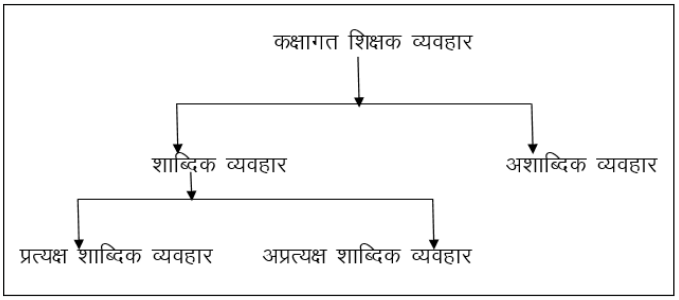

शाब्दिक व्यवहार %& कक्षा में जब अध्यापक विद्यार्थी शब्दों के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं तो उसे शाब्दिक व्यवहार कहा जाता है। शाब्दिक व्यवहार में अभिव्यक्ति का माध्यम मौखिक, लिखित तथा प्रतीकात्मक होता है शिक्षक अपने शिक्षण में तीन प्रकार के शाब्दिक व्यवहारों का प्रयोग करता है जैसे – बौद्धिक क्रियाएं, निर्देश क्रियाएं, सवेंगात्मक तथा भावात्मक क्रियाएं।

शिक्षक के शाब्दिक व्यवहार को दो भागों में बांटा गया है –

1. प्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार
2. अपत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार

1. **प्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार** – प्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार में शिक्षक शिक्षण के अधिकांश समय भाशण द्वारा अपने विचार व्यक्त करने में व्यतीत करता है, छात्रों से कार्य कराने में निर्देश व आज्ञा का प्रयोग करता है, सही व्यवहार कराने के लिए विद्यार्थियों की आलोचना करता है, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्रों को कम महत्व देता है।

2. **अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार** – अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार में शिक्षक कक्षा में कम बोलता है तथा छात्रों को बोलने का अधिक अवसर प्रदान करता है, छात्रों की समस्याओं को समझकर उनका समाधान करने का प्रयास करता है, छात्रों से प्रश्न अधिक मात्रा में पूछकर उन्हें प्रेरित व उत्साहित करता है, प्रशंसा व प्रोत्साहित करता है , छात्रों की भावनाओं व अनुभूतियों को स्वीकार करता है, प्रशंसा पूछता है आदि।

अशाब्दिक व्यवहार :– शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सिर हिलाने की प्रतिक्रिया करता है, छात्रों को शान्त करने के लिए अंगुली का प्रयोग, मुस्कराकर स्वीकृति देना आदि।

फ्लैण्डर्स की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया अध्ययन विधि शिक्षण के क्षेत्र में विशेश महत्व रखती है। फलैण्डर्स की विधि द्वारा कक्षा में शिक्षक व्यवहार सम्बन्धी वस्तुनिश्ठ सूचनाओं का अंकन किया जा सकता है। यह शिक्षक को शिक्षण में सुधार लाने के लिए एक अच्छा माध्यम है। इस अन्तःक्रिया अध्ययन से यह स्पश्ट हो जाता है कि एक अच्छे शिक्षक को छात्रों की अनुभूति स्वीकार कर उन्हें प्रोत्साहन देना, उससे प्रश्न पूछना, क्रियाएं कराना और उनकी प्रतिक्रियाओं को सहानुभूतिपूर्वक सुनना और जहां तक सम्भव हो सके अपने व्याख्यान को सीमित रखना।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. बी.एकृ प्रशिक्षणार्थियों के कक्षाकक्ष व्यवहार का अध्ययन करना।

2. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों के कक्षाकक्ष अध्यापक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के कक्षाकक्ष अध्यापक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. भावी शिक्षको के कक्षाकक्ष व्यवहार प्रबन्धन और शिक्षण अभिक्षमताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों के कक्षाकक्ष में अध्यापक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. पुरुश प्रशिक्षणार्थियों के कक्षाकक्ष में अध्यापक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रषुत शोध में न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में कक्षाकक्ष व्यवहार अवलोकन के लिए झुन्झुनू जिले के 2 शिक्षण महाविद्यालयों के 40 प्रशिक्षणार्थियों (10 शहरी पुरुष, 10 शहरी महिला व 10 ग्रामीण पुरुष, 10 ग्रामीण महिला) का चयन यादृच्छिक प्रणाली के अन्तर्गत लोटरी विधि द्वार किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

कक्षा–कक्ष में अध्यापक व्यवहार के लिये फ्लैण्डर्स का अन्तःक्रिया विश्लेशण प्रतिमान का उपयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्श –

सम्पूर्ण भावी अध्यापकों के कक्षाकक्ष व्यवहार की तुलना से सम्बन्धी निष्कर्श

- सम्पूर्ण भावी शिक्षकों का कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में अप्रत्यक्ष

व्यवहार 13.29 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण भावी शिक्षिकाओं का कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में अप्रत्यक्ष व्यवहार 8.62 प्रतिशत प्राप्त हुआ जो शहरी शिक्षिकाओं की तुलना में कम है। इस आधार पर निष्कर्श निकाला जा सकता है कि भावी अध्यापक, अध्यापिकाओं की तुलना में कक्षाकक्ष में छात्रों की सहभागिता को अधिक अवसर देता है और उनकी अनुभूतियों को स्वीकार करता है तथा उन्हें प्रशंसा व प्रोत्साहन अधिक प्रदान किया जाता है।

- सम्पूर्ण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में प्रत्यक्ष व्यवहार 66.52 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण भावी शिक्षिकाओं की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में प्रत्यक्ष व्यवहार 73.12 प्रतिशत पाया गया जो भावी शिक्षकों की तुलना में अधिक है। इस आधार पर निष्कर्श निकाला जा सकता है कि भावी शिक्षिकाएं अपने कक्षाकक्ष में शिक्षक केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया को अधिक महत्व देती है।

- सम्पूर्ण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्रक्रिया 17.44 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण भावी शिक्षिकाओं की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्रक्रिया 15.64 प्रतिशत पाई गई। अतः शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्रक्रिया भावी शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक है इस आधार पर कहा जा सकता है कि भावी शिक्षक अपनी कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया मे छात्रों को बोलने तथा प्रश्न पूछने का अधिक अवसर प्रदान करते है।

- सम्पूर्ण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति 2.75 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण भावी शिक्षिकाओं की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति 2.62 प्रतिशत पाई गई। अतः कक्षाकक्ष में मौन या विभ्रान्ति की स्थिति की तुलना करने पर दोनो में लगभग समान पाई गई।

भावी शिक्षकों के कक्षाकक्ष व्यवहार की तुलना (क्षेत्र के आधार पर)

- शहरी भावी शिक्षकों का कक्षाकक्ष में अप्रत्यक्ष व्यवहार 12. 97प्रतिशत तथा ग्रामीण भावी शिक्षकों का कक्षाकक्ष व्यवहार 13.1प्रतिशत प्राप्त हुआ जो शहरी भावी शिक्षकों के समान है उपरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष शिक्षण अन्तःक्रिया में अध्यापकों का अप्रत्यक्ष व्यवहार में कोई अन्तर नहीं हैं।

- शहरी भावी शिक्षकों का कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में प्रत्यक्ष व्यवहार 66.85 प्रतिशत पाया गया जबकि ग्रामीण शिक्षकों का प्रत्यक्ष व्यवहार 66.2 प्रतिशत पाया गया। अतः भावी शिक्षकों के मध्य क्षेत्र के आधार पर कक्षाकक्ष व्यवहार में कोई अन्तर नही है। उरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण शिक्षक कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में व्याख्या देना सम्बन्धी वर्ग का लगभग समान प्रयोग करते है।

- शहरी भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्र क्रिया 17 प्रतिशत तथा ग्रामीण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्र क्रिया 17.87 प्रतिशत पाई गई। उपरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जाता है कि शहरी व ग्रामीण स्थिति के आधार पर भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्रक्रिया में कोई अन्तर नही है।

- शहरी भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति 3.18 प्रतिशत तथा ग्रामीण भावी शिक्षकों की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति 2.47प्रतिशत पाई गई। इससे यह स्पश्ट होता है कि ग्रामीण भावी शिक्षकों की कक्षा में मौन/विभ्रान्ति की स्थिति तुलना में शहरी भावी शिक्षकों की कक्षा में मौन की स्थिति अधिक पाई गई।

भावी शिक्षिकाओं के कक्षाकक्ष व्यवहार की तुलना (क्षेत्र के आधार पर)

- शहरी भावी अध्यापिकाओं का कक्षाकक्ष में अप्रत्यक्ष व्यवहार 9.1 प्रतिशत`तथा ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं का कक्षाकक्ष में अप्रत्यक्ष व्यवहार 8.2 प्रतिशत प्राप्त हुआ। अतः ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की तुलना में शहरी छात्राध्यापिकाओं का अप्रत्यक्ष व्यवहार अधिक है।

- उपरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जा सकता है कि शहरी छात्राध्यापिकाओं की कक्षाकक्ष शिक्षण प्रक्रिया में छात्र अन्तःक्रिया अधिक है जबकि ग्रामीण भावी अध्यापिकाओं की कक्षाकक्ष शिक्षण अन्तःक्रिया में छात्र अन्तःक्रिया शहरी की अपेक्षा कम है।

- शहरी छात्राध्यापिकाओं का कक्षाकक्ष में प्रत्यक्ष व्यवहार 72. 05 प्रतिशत पाया गया जबकि ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं का प्रत्यक्ष व्यवहार 74.17 प्रतिशत पाया गया। अतः शहरी छात्राध्यापिकाओं का प्रत्यक्ष व्यवहार ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के तुलना में के पाया गया है।

- उपरोक्त आधार पर निश्कर्श निकाला जा सकता है कि शहरी छात्राध्यापिकाओ की तुलना में ग्रामीण छात्राध्यापिकाएं ज्यादा बोलती है। अर्थात ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण प्रक्रिया अध्यापक केन्द्रित शिक्षण शहरी की बजाय अधिक होता है।

- शहरी भावी अध्यापिकाओं की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्र क्रिया 15.9 प्रतिशत तथा ग्रामीण भावी अध्यापिकाओं की कक्षाकक्ष अन्तःक्रिया में छात्र क्रिया 15.43प्रतिशत है।

- उपरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जाता है कि शहरी व ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण अन्तःक्रिया में छात्र सहभागिता या छात्रक्रिया में कोई अन्तर नही पाया गया। दोनों क्रियाओं लगभग समान पाई गई।

- शहरी भावी अध्यापिकाओं की कक्षाअन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति की स्थिति 3प्रतिशत तथा ग्रामीण भावी

अध्यापिकाओं की कक्षाअन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति की स्थिति 2.25 प्रतिशत पाई। उपरोक्त आधार पर निष्कर्श निकाला जाता है कि शहरी भावी अध्यापिकाओं कक्षागत अन्तःक्रिया में मौन या विभ्रान्ति की स्थिति ग्रामीण भावी अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. शर्मा, डॉ. आर.ए., चतुर्वेदी, डॉ. शिखा (2014), शिक्षा के तकनीकी आधार, मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो।
2. सिंह, डॉ. मयाशंकर (2006), शिक्षण तकनीक एवं शिक्षा के नूतन आयाम, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
3. सक्सेना, एन.आर., मिश्रा, बी.के., मोहन्ती, आर.के. (2005), अध्यापक शिक्षा, मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो।
4. रुहेला, सत्यपाल, (2009), विकासोंन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. व्यास, सिंह, डॉ., भगवतीलाल, डॉ., एस.पी. (2013), भारत में शैक्षिक व्यवस्था एवं विद्यालय संगठन, राधा प्रकाशन मन्दिर।
6. मिश्रा, मंजू, (2008), शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस ;प्रा.द्ध लि.।